विचार बिन्दु

आत्मविश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है। –एमर्सन

हमको मालूम है पानी की हक़ीक़त मगर लोगों को बहलाने का बहाना अच्छा है

आजादी के बाद से ही मरुस्थलीय क्षेत्र राजस्थान पेयजल के संकट से जूझता रहा है। पहले लोग कुए, तालाब और बावड़ियों के पानी पर निर्भर थे। आबादी बढ़ने के साथ पानी की मांग भी बढ़ने लगी। जलप्रदाय की अनेक योजनाएं बनी मगर पानी का संकट कम होने के बजाय बढ़ता ही गया। परम्परागत श्रोत सूख गए और जल प्रदाय योजनाओं के नए केंद्र बनने शुरू हुए। हर साल करोड़ों अरबों की राशि इन कार्यों पर खर्च होने के बाद भी प्रदेश में पेयजल की किल्लत से हम जूझ रहे है। जल ही जीवन है। हम भोजन के बिना एक महीने से ज्यादा जीवित रह सकते हैं, लेकिन जल के बिना एक सप्ताह से अधिक जीवित नहीं रह सकते। राजस्थान में इस वर्ष मार्च और आधे अप्रैल में गर्मी का असर अपेक्षाकृत कम देखा गया। मगर पिछले एक सप्ताह से तापमान में एकाएक बढ़ोतरी हुई और यह 40 डिग्री को पार कर गया। इसके साथ ही भीषण गर्मी और आंधी तूफान ने आमजन के छक्के छुड़ा दिए । गर्मी शुरू होते ही सूर्य की किरणें आग उगलने लगी हैं। धरती का वातावरण गर्म हो उठता है। हवाएं भी गर्म होकर अपना रौद्र रूप दिखाने लगती हैं। राजस्थान में गर्मियों में स्थानीय चक्रवात के कारण जो धूल भरे बवंडर बनते हैं उन्हें भभुल्या कहा जाता है। प्रदेश के कई जिले इस समय भभुल्या की चपेट में है।

गर्मी और पानी का चोली दामन का साथ है। गर्मी अपने साथ पानी संकट भी लेकर आयी है। दोनों आपदाओं ने मिलकर लोगों का जीना हराम कर दिया है। जब तक प्रदेश में मानसून मेहरबान नहीं होंगे तब तक आम आदमी की मुश्किलें कम नहीं होंगी। इधर राजस्थान सरकार ने 24 अप्रैल से बचत, राहत और बढ़त के नाम से महंगाई राहत शिविर लगाने की घोषणा कर दी है। मगर पिछले कुछ सालों में प्रदेश में अच्छी बारिश के बावजूद स्वच्छ पेयजल के लिए लोग एक-एक बूंद पानी के लिए तरसते हैं। कई स्थानों में तो संघर्ष की स्थिति हो जाती है। प्रदेश के 302 ब्लॉक में 219 ब्लॉक में पानी अतिदोहित किया जा रहा है। राज्य के डूंगरपुर, बांसवाड़ा, बीकानेर, गंगानगर और हनुमानगढ़ ब्लॉक सुरक्षित श्रेणी में बताये गए। राजधानी जयपुर के हालात चिंताजनक हैं। जयपुर जिले के 16 ब्लाकों में से सभी 16 को अतिदोहित या डार्क जोन में रखा गया है। राज्य के 29 जिले डार्क जोन की श्रेणी में हैं।

सबसे बुरी स्थिति राजधानी जयपुर की दिख रही है। प्रदेश की राजधानी इस समय बीसलपुर बांध में पानी की अच्छी उपलब्धता के बावजूद पानी की बढ़ती कमी और घटते पेयजल स्त्रोतों का सामना कर रही है। जलदाय विभाग की लापरवाही के कारण लोगों को सामान रूप से पानी नहीं मिल रहा है। गर्मी शुरू होते ही राजधानी के बहुत से इलाके पेयजल संकट से जूझने लगे है। विभागीय अधिकारी कहते है बहुत से प्रभावी लोगों ने अपने घरों में पानी खींचने की बड़ी बड़ी मोटरें लगा रखी है जिससे अंतिम छोर तक पानी नहीं पहुंच पाता। अधिकारियों का जनता को बहलाने का यह बहाना तो अच्छा है मगर सब को पेयजल सुलभ करने का दायित्व सरकार का है जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती। एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले साल बीसलपुर बांध के भरने से जयपुर ही नही बल्कि अन्य जिलों में एक करोड़ से अधिक आबादी के लिए जनवरी 2024 तक पानी का इंतजाम हो चुका है। तीन साल बाद अगस्त 2022 में बाँध फिर छलका। जयपुर बड़े पैमाने पर भूजल और एकल सतही जल स्त्रोत, बीसलपुर बांध पर निर्भर करता है। बीसलपुर में पानी की अच्छी स्थिति के बाद भी जयपुरवासी पेयजल के लिए तरस रहे है। जयपुर राजस्थान की राजधानी है जहाँ प्रतिदिन प्रदेश के विभिन्न स्थानों से हजारों लोग मजदूरी सहित विभिन्न कामों से जयपुर आते है। जयपुर महानगर की 42 लाख से ज्यादा आबादी के लिए पेयजल का एकमात्र स्त्रोत टोंक जिले में स्थित बीसलपुर बांध है। पानी की अधिक जरुरत महसूस की जा रही है कूलरों को भी पानी चाहिए, पानी कहाँ से आएगा यह यक्ष प्रश्न हमारे सामने आ खड़ा हुआ है जिसका समाधान फिलहाल दिखाई नहीं दे रहा है। जब तक मानसून की बारिस नहीं होगी तब तक गर्मी के साथ पानी भी हमारी जिंदगानी को कष्ट देता रहेगा । राज्य सरकार महंगाई से निजात दिलाने के लिए 24 अप्रैल से शिविरों का आयोजन कर रही है। लोगों का कहना है इन शिविरों के पीछे लोगों को राहत कम और चुनावी अंकगणित अधिक है। अच्छा होता इन शिविरों के माध्यम से जल ही जीवन है को चरितार्थ कर आमजन को पेयजल सुलभ कराने पर ध्यान दिया जाये। आश्चर्य तो तब होता है जब साल दर साल लाखों करोड़ों रूपये की धनराशि खर्च करने के बाद भी लोगों को पूरी तरह पीने को स्वच्छ पानी नहीं मिलता। आजादी के 75 साल बाद भी स्वच्छ पानी मिलना दूभर हो गया है। दूरदराज की बात एक बारगी छोड़ भी दें तो प्रदेश की राजधानी में स्वच्छ पानी के लिए आज भी लोग तरस गए है। टंकियों की नियमित सफाई नहीं हो पा रही है। जर्जर पाइप लाइनों में सीवर का पानी मिलना आम बात है जिसका सीधा असर मानव के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। परकोटे में गन्दा पेयजल मिलने की आम शिकायतें है। सांगानेर क्षेत्र की अनेक बस्तियों में नलों में गन्दा पानी आने से लोगों में भारी आक्रोश है। लोग प्रदर्शन और धरना आदि आंदोलन का सहारा ले रहे है। राजधानी की कच्ची बस्तियों के निवासी तो वर्षों से गन्दा पानी पीने को मज़बूर है। सरकार पेयजल की स्थिति में सुधार का लगातार दावा कर रही है। करोड़ों रुपयों की योजनाएं क्रियान्वित करने के बावजूद स्वच्छ पानी नहीं मिल पा रहा है। इसके पीछे कारण जो भी हो एक लोक कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है की वह पानी जैसी प्राथमिक जरुरत से लोगों को लाभान्वित करें।

> **दूरदराज की बात एक बारगी छोड़ भी दें तो प्रदेश की राजधानी में स्वच्छ पानी के लिए आज भी लोग तरस गए है। टंकियों की नियमित सफाई नहीं हो पा रही है। जर्जर पाइप लाइनों में सीवर का पानी मिलना आम बात है जिसका सीधा असर मानव के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है।**

राजस्थान में मानसून के दौरान 415 मिमि औसत बरसात होती है। पिछले साल 2022 में राजस्थान में 595.9 मिमि औसत बारिश हुई जो सामान्य से 37 फीसदी अधिक दर्ज की गई। इसके बाद भी आज हालात यह बन गए है की एक तो भीषण गर्मी ऊपर से पानी की बेरहम मार ने हमारे सामने दुगुना संकट उपस्थित कर दिया है। मानव के साथ पशु धन भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति शहरों से अधिक गंभीर है जहाँ कई-कई किलोमीटर दूर से पानी ढोया जा रहा है।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 22 अप्रैल, 2023

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, कृत्तिका नक्षत्र रात्रि 11:24 तक, आयुष्मान योग प्रातः 9:24 तक, कौलव करण प्रातः 7:49 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मिथुन, बुध-मेष, गुरू-मेष, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज अक्षय तृतीया परशुराम जयन्ती, श्री बसवेश्वर जयन्ती, बद्री केदार यात्रा दर्शन आरम्भ होंगे। आज कल्पादि, त्रेतायुगादि है। आज से सब्वाल मुस्लिम मास आरम्भ होगा। आज रमजान ईद है। आज शनि रोहिणी अमृत सिद्धि योग रात्रि 11:24 से सूर्योदय तक है। रवियोग रात्रि 11:34 से आरम्भ होगा। आज श्री शिवाजी जयन्ती, आखातीज और विश्व पृथ्वी संरक्षण दिवस है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:38 से 9:144 तक, चर 12:27 से 2:04 तक, लाभ-अमृत 2:04 से 5:17 तक।
राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 6:50

मेष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कर्क

आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

कन्या

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

वृश्चिक

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

शिव भक्त एवं मार्शल आर्ट के जनक भगवान परशुराम

डॉ. जे.के. गर्ग

महर्षि जमदग्नि आध्यात्मिक उपलब्धियों के स्वामी थे जिन्हें आग पर नियंत्रण पाने व उनकी पत्नी रेणुका को पानी पर नियंत्रण पाने का वरदान था। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार महर्षि भृगु के पुत्र महर्षि जमदग्नि ने पुत्र प्राप्ति हेतु देवराज इन्द्र को प्रसन्न करने के लिये पुत्रेष्टि यज्ञ किया था। देवराज इन्द्र के वरदान के फलस्वरूप महर्षि जमदग्नि की पत्नी रेणुका के गर्भ से वैशाख शुक्ल तृतीया को मध्यप्रदेश ग्राम मानपुर (इंदौर जिला) में एक अद्भुत प्रतिभाशाली पुत्र का जन्म हुआ जो कालांतर में भगवान परशुराम के नाम से विख्यात हुए। भगवान परशुराम को अमर रहने का वरदान मिला था और यह भी कहा जाता है कि वे आज भी हमारे बीच मौजूद हैं तथा कलियुग के अंत में वे विष्णु के दसवें अवतार के रूप में जन्म लेंगे। परशुराम गायत्री मंत्र का विधि पूर्वक जाप करने से मनुष्य को अपने दुखों से छुटकारा मिलता है और कठिनाइयों से लड़ने के लिए साहस का संचार होता है। मंत्र इस प्रकार है– **'ॐब्रह्मक्षत्राय विद्महे क्षित्रयान्ताय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।।' 'ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि तन्नोपरशुरामः प्रचोदयात्।।' 'ॐ रां रां ॐ रां रां परशुहस्ताय नमः।।'**

सनातन धर्म में परशुराम के बारे में माना जाता है कि वे त्रेतायुग और द्वापर युग से अमर हैं।

परशुराम जी के जन्म एवं जन्मस्थान के पीछे कई मान्यताएं एवं अनसुलझे सवाल है। सभी की अलग अलग राय एवं अलग-अलग विश्वास हैं। भार्गव परशुराम को हाइहाया राज्य, जो कि अब मध्य प्रदेश के महेश्वर नर्मदा नदी के किनारे बसा है, वहाँ का तथा वहीं से परशुराम का जन्म भी माना जाता है। अन्य मान्यता के अनुसार रेणुका तीर्थ पर परशुराम के जन्म के पूर्व जमदग्नि एवं उनकी पत्नी रेणुका ने शिवजी की तपस्या की थी उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी ने वरदान दिया और स्वयं विष्णु ने रेणुका के गर्भ से जमदग्नि के पांचवें पुत्र के रूप में इस धरती पर जन्म लिया। उन्होंने अपने इस पुत्र का नाम रामभद्र रखा।

परशुराम जी ने शिवजी को प्रसन्न करने के लिये अनेक बार तपस्या पूजा-अर्चना की थी। शिवजी ने परशुराम को वरदान देते हुए कहा कि परशुराम का जन्म धरती के राक्षसों का नाश करने के लिए हुआ है। इसलिए भगवान शिव ने परशुराम को, देवताओं के सभी शत्रु, दैत्य, राक्षस तथा दानवों को मारने में सक्षमता का वरदान दिया। हिन्दू धर्म में विश्वास रखने वाले अनेक ज्ञानी, पंडितो के मतानुसार धरती पर रहने वालों में परशुराम और रावण के पुत्र इंद्रजीत को ही सबसे खतरनाक, अद्वितीय और शक्तिशाली अस्त्र – ब्रह्मांड अस्त्र, वैष्णव अस्त्र तथा पशुपति अस्त्र प्राप्त थे।

परशुराम दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है। परशु अर्थात कुल्हाड़ी तथा राम, इन दो शब्दों को मिलाने पर कुल्हाड़ी के साथ राम अर्थ निकलता है। जैसे राम, भगवान विष्णु के अवतार हैं। उसी प्रकार परशुराम भी विष्णु के अवतार हैं। परशुराम के अनेक नाम हैं, उन्हें रामभद्र, भार्गव, भृगुपति, भृगुवंशी (ऋषि भृगु के वंशज), जमदग्नि(जमदग्नि के पुत्र) के नाम से भी जाना जाता है।

भगवान राम ने सीता स्वयंवर के समय राजा जनक की शर्त की अनुपालन में भगवान शिव के धनुष को तोड़ दिया और उनका माता सीता के साथ विवाह हो गया। शिव धनुष के तोड़े जाने के समाचार को सुनकर शिव भक्त परशुराम अपना आपा खोकर क्रोधित होते हुवे राजा जनक की राज सभा पहुंचे। राज सभा में उनका लक्ष्मणजी के साथ तीर्व वाद-विवाद हुआ और उनके मध्य लड़ाई की नोबत आ गई। मर्यादा पुरषोंतम राम ने अत्यंत शालीनता के साथ उनसे बात करके उनके क्रोध को शांत किया। परशुराम को अपनी योग शक्ति से मालुम पड़ा कि उनके सामने भगवान विष्णु के अवतार भगवान राम खुद खड़े हैं। अपने इस अनुभूति की पुष्टि करने के लिये परशुराम ने विष्णु का प्रिय धनुष गांडीव भगवान राम को देते हुए उसको संधान करने को कहा। भगवान राम ने एक तीर प्रत्यंचा पर चढ़ाई और महर्षि परशुराम से कहा कि वे अब इस तीर को खाली नहीं छोड़ सकते, वे बताएं कि वे इसे किस पर चलाये। तब परशुराम जी ने भगवान राम से आग्रह किया कि वे उस तीर के माध्यम से उनके अहंकार को नष्ट करने की कृपा करें। इसके बाद परशुराम जी प्रसन्न मन से महेन्द्र पर्वत पर निवास करने के लिये चले गये। धार्मिक मान्यता है कि भगवान परशुराम जी को अमरता का वरदान प्राप्त है और आज भी वे उसी महेन्द्र पर्वत पर निवास करते हैं।

स्मरणीय है कि मार्शल आर्ट के संस्थापक भगवान परशुराम ही थे। कलरीपायट्टु कलरीपायट्टु भगवान परशुराम द्वारा प्रदान की गई शस्त्र विद्या है जिसे आज के युग में मार्शल आर्ट के नाम से जाना जाता है। सत्य तो यही है कि मार्शल आर्ट को भगवान परशुराम व सप्त ऋषि अगस्त्य लेकर आए थे। भगवान परशुराम मूल रूप से ब्राह्मण थे किंतु फिर भी उनमें शस्त्रों की अतिरिक्त जानकारी थी और इसी कारणवश उन्हें एक क्षत्रीय भी कहा जाता है। एक बार परशुराम शिव जी से मिलने कैलाश पहुंचे जहां पर गणेश जी द्वारा उनको भगवान शिव से मिलने से रोके जाने से वे रुष्ट और क्रोदित हो गये। परशुराम ने गणेश जी को युद्ध का निमंत्रण दिया। इस युद्ध में परशुराम ने गणेशजी का बाएं दांत पर प्रहार कर उसे तोड़ दिया इसी वजह से परशुराम जी ने गोरी पुत्र गणेश जी का दांत तोड़ डाला जिसकी वजह से गणेश जी एक दंत विनायक कहलाये। अपने पुत्र गणेश के दांत को तोड़े जाने से मां पार्वती अत्यंत क्रुद्ध हो गईं। माता गोरी ने कहा कि कहा कि परशुराम क्षत्रियों के रक्त से संतुष्ट नहीं हुए इसलिए उनके पुत्र गणेश को हानि पहुंचाना चाहते हैं, वे उनको श्राप देने ही वाली थी इसी समय गणेश जी ने स्वयं हस्तक्षेप कर मां पार्वती को प्रसन्न और शांत किया। गणेश जी की इस अनुकम्पा और दयालुता के सम्मुख परशुराम नतमस्तक हो गये एवं परशुराम जी ने विनायक गणेश को अपना परशु प्रदान कर दिया। देवों के देव महादेव ने परशुराम की अद्‌भुत प्रतिभा को देख कर उनको अपना परशु दिया था। जिसके पश्चात उनका नाम परशुराम पड़ा। शिव से परशु को पाने के बाद समस्त दुनिया में ऐसा कोई नहीं था जो उन्हें युद्ध उनको पराजित कर सकें। मान्यताओं के मुताबिक्र कृष्ण के विराट स्वरूप को अर्जुन के अतिरिक्त तीन अन्य लोगों ने भी देखा था जिनमें एक परशुराम जी भी थे। महाभारत में भी परशुराम जी के बारे में अनेक कथाओं का वर्णन मिलता है। परशुराम जी ने राजकुमारी अंबा को न्याय दिलाने के लिए भीष्म के साथ घोर युद्ध किया लेकिन उसका कोई परिणाम नहीं निकला और आखिर में वे अंबा को न्याय नहीं दिलवा सके तो उन्होंने शपथ ली कि वे भविष्य में किसी भी क्षत्रिय को युद्ध कला की शिक्षा नहीं देंगे। महाभारत की दूसरी प्रमुख कथा कर्ण की है। जब कर्ण को उन्होंने अपना शिष्य बनाया और कर्ण की वास्तविकता जानने के बाद उसे श्राप दिया कि जब उसे उनकी शिक्षा की सबसे ज्यादा जरूरत होगी तभी वह इस शिक्षा को भूल जाएगा। परशुराम जी शिक्षा-दीक्षा महर्षि विश्वामित्र एवं महर्षि ऋचीक के आश्रम में हुई थी। महर्षि ऋचीक ने परशुराम की योग्यता से प्रसन्न होकर सारंग धनुष उपहार में दिया। ऋषि कश्यप ने उन्हें अविनाशी वैष्णव मंत्र प्रदान किया। भगवान शंकर की उन्होंने आराधना की और शिव ने उन्हें विद्युदभि नाम का परशु प्रदान किया। भगवान शिव ने उन्हें त्रैलोक्य विजय कवच, स्तवराज स्त्रोत और कल्पतरु मंत्र दे कर उपकृत किया।

एक दिन किसी कारणवश परशुराम के पिता जमदग्नि जी अपनी पत्नी रेणु से नाराज हो गये और कुपित पिता ने परशुराम को आज्ञा दी कि वे अपनी माता का वध कर दें। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का अविलम्ब पालन करते हुए अपनी मां रेणु का वध कर दिया। परशुराम की पितृभक्ति से खुश हो कर महर्षी जमदग्नि जी ने परशुराम को वरदान मांगने को कहा तो माता के भक्त ने अपनी माता को जीवित कर देने का वर मांगा। ऋषि जमदग्नि ने अपनी पत्नि को पुनर्जीवित कर दिया।

परशुराम जी ने 21 बार इस पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन किया। मान्यता के अनुसार हैहय वंश के राजा सहस्त्रार्जुन या कार्तवीर्यार्जुन ने घोर तपस्या की और भगवान दत्तात्रेय को प्रसन्न कर लिया। भगवान दत्तात्रेय ने कार्तवीर्यार्जुन को एक हजार भुजाएं और युद्ध में अजेय होने का वरदान दे दिया। एक बार राजा कार्तवीर्यार्जुन जंगल में शिकार करता हुआ अपनी सेना के साथ ऋषि जमदग्नि के आश्रम पहुंचा जहां उसने ऋषि की कामधेनु गाय को देखा और वो कामधेनु गाय को जमदग्नि से बलपूर्वक छीन ले गया। कार्तवीर्यार्जुन की इस अनैतिक हरकत से नाराज होकर परशुराम जी ने अंहकारी सहस्त्रार्जुन को युद्ध के लिए ललकारा और उसकी सभी हजार भुजाओं को अपनी फरसे से काट करके उसका वध कर दिया। सहस्त्रार्जुन के पुत्रों ने इसका प्रतिशोध लेने के लिए परशुराम जी की अनुपस्थिति में महर्षि जमदग्नि के आश्रम पर आक्रमण कर दिया और जमदग्नि की हत्या कर दी। परशुराम जी की माता रेणुका भी अपने पति के साथ सती हो गई। कुपित परशुराम जी ने हैहय वंशीय राजा के महिष्मति नगर पर आक्रमण कर सभी क्षत्रियों का विनाश कर दिया। अपने क्रोध को शांत करने के लिए पौराणिक मान्यताओं के मुताबिक भगवान परशुराम ने पृथ्वी को 21 बार क्षत्रिय विहीन कर दिया।

परशुराम जयंती हिन्दू पंचांग के वैशाख माह की शुक्ल पक्ष तृतीया को मनाई जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन दिये गए पुण्य का प्रभाव कभी खत्म नहीं होता है। अक्षय तृतीया से त्रेता युग का आरंभ माना जाता है। मध्यकालीन समय के बाद जब से हिन्दू धर्म का पुनरुद्धार हुआ है, तब से परशुराम जयंती का महत्व और अधिक बढ़ गया है। इस दिन उपवास के साथ साथ सर्व ब्राह्मण का जुलूस, सत्संग आयोजित किये जाते हैं। परशुराम जी की पूजा-अर्चना समस्त भारत में होती है। मान्यता के अनुसार भारत के अधिकतर गांव परशुराम जी ने ही बसाए थे। उत्तर भारत से लेकर गोवा, केरल और तमिलनाडु तक परशुराम जी की आकर्षक मनमोहक प्रतिमाएं दिखाई देंगी। परशुराम जी के जन्म एवं जन्म स्थान के पीछे कई मान्यताएं एवं अनसुलझे सवाल है। भार्गव परशुराम को हैहय राज्य, जो कि अब मध्य प्रदेश के महेश्वर नर्मदा नदी के किनारे बसा है, वहाँ का तथा वहीं से परशुराम का जन्म भी माना जाता है। अन्य मान्यता अनुसार रेणुका तीर्थ पर परशुराम के जन्म के पूर्व जमदग्नि एवं उनकी पत्नी ने शिवजी की तपस्या की थी उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी ने वरदान दिया और स्वयं विष्णु ने रेणुका के गर्भ से जमदग्नि के पांचवें पुत्र के रूप में इस धरती पर जन्म लिया। उन्होंने अपने इस पुत्र का नाम रामभद्र रखा।

वैदिक काल के अंत के दौरान परशुराम योद्धा से सन्यासी बन गए थे। उन्होंने कई जगह पर कठोर तपस्या की थी। उड़ीसा के महेन्द्रगिरी में तो आज भी उनकी उपस्थिति मानी जाती है। पुराणों में प्रसिद्ध संत व्यास, कृपा, अश्वत्थामा के साथ-साथ परशुराम को भी कलयुग में ऋषि के रूप में पूजा जाता है। उन्हें सप्तऋषि के रूप में आठवें मानव तारा के रूप में में गिना जाता है। वे अजर अमर हैं उनकी मृत्यु कभी नहीं हुई। भारत में कई स्थानों पर जगह पर परशुराम मंदिर स्थित है जैसे– अट्टिला, कुड्डापह (आंध्र प्रदेश), सोहनाग, सलेमपुर, (उत्तर प्रदेश), अखनूर (जम्मू और कश्मीर), कुंभलगढ़, (राजस्थान महुगढ़, (महाराष्ट्र), पीताम्बरा, कुल्लू, (हिमाचल प्रदेश), जनपद हिल, इंदौर (मध्य प्रदेश) परशुराम कुंड (जिला लोहित), अरुणाचल प्रदेश ध्यान रखने की बात है कि इस कुंड में अपनी माता का वध करने के बाद परशुराम ने यहां स्नान कर अपने पाप का प्रायश्चित किया था। परशुराम जयंती के दिन भव्य आकर्षक जुलूस, शोभायात्रा निकाली जाती हैं। परशुराम भगवान के नाम पर उनके मंदिरों में हवन – पूजन का आयोजन किया जाता है। सभी लोग पूजा में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं और दान आदि करते हैं। भगवान परशुराम के नाम पर भक्तों जगह जगह भंडारे का आयोजन करते है और सभी श्रद्धालु इस भोजन प्रसादी का लाभ उठाते हैं। कुछ लोग इस दिन उपवास रख कर परमात्मा से भगवान परशुराम की तरह पुत्र देने की प्रार्थना करते हैं वे जानते हैं कि परशुराम जी के आशीर्वाद से परशुराम जी जैसा पराक्रमी बेटा प्राप्त होगा। वराह पुराण के अनुसार परशुराम जी के जन्म दिन पर उपवास रखने एवं परशुराम पूजा-अर्चना करने से अगले जन्म में उनको राजा बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

– डॉ. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक
कालेज शिक्षा जयपुर

।। अक्षय फलदात्री-अक्षय तृतीया।।

अक्षय तृतीया को आखा तीज और बैसाखी तीज कहकर भी पुकारा जाता है। यह माना जाता है कि इस दिन जो भी शुभ कार्य किए जाते हैं उनका अक्षय फल प्राप्त होता है। वैसे पूरे बारह महिनों में ही शुक्ल पक्ष की तृतीया शुभ और कल्याणकारी मानी जाती है लेकिन बैशाख माह की तिथि शुक्ल पक्ष की तीज अति स्वयंसिद्ध मुहूर्त मानी गई है। इसी शुभ दिवस पर कभी त्रेता युग की शुरूआत हुई थी। इस तिथि पर लोग गणेश और देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं, महालक्ष्मी मंदिर जाकर आराधना करते हैं और यह माना जाता है कि उन्हें प्रसन्न करने से अक्षय समृद्धि की प्राप्ति होती है। अक्षय तृतीया को आयुष्मान, सौभाग्य, त्रिपुष्कर, रवि, अमृतसिद्धि और सर्वार्थ सिद्धि छः शुभ योग प्राप्त होते हैं।

एक प्राचीन कथा यह भी है कि इसी दिन भगवान शिव से कुबेर को धन की प्राप्ति हुई थी और इसी खास दिन शिवजी ने माँ लक्ष्मी को धन की देवी के रूप में पूजित होने का आशीर्वाद दिया था। माना गया है कि इस दिन जिनका परिणय संस्कार होता है उनका सौभाग्य अखंड रहता है और इसिलिए अक्षय सौभाग्य की कामना से इस दिन को विवाह के लिए शुभ मुहूर्त माना जाता है। स्वर्ण और आभूषण खरीदना, गृहप्रवेश, पदभार ग्रहण, वाहन खरीदी, भूमि पूजन किसी नये व्यापार की शुरूआत के लिए यह दिन सर्वथा उपयुक्त है। माना जाता है कि इस दिन किसी भी कार्य की शुरूआत करने पर ईश्वर की विशेष अनुकंपा प्राप्त होती है। अक्षय तृतीया को सतयुग और त्रेता युग की शुरूआत हुई थी। इस दिन शुभ कार्य करने से वे अक्षय रहते हैं। अक्षय का अर्थ है जिसका क्षय नहीं होता। इस दिन ब्रह्मा के पुत्र अक्षय का प्राकट्य दिवस भी है।

द जैन धर्म में इक्षु तीज
द वर्षीतय-पारणोत्सव

इस दिन जैनधर्म के प्रथम तीर्थकर श्री आदिनाथ भगवान ने एक वर्ष की तपस्या पूर्ण करने के पश्चात इक्षु (गन्ने) रस से पारणा किया था। जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर श्री आदिनाथ भगवान ने अपने कर्मबंधनों को तोड़ने के लिए संसार के भौतिक व पारिवारिक सुखों को त्यागते हुए वैराग्य अंगीकार किया था। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह संतोष व शांति के विचारों का प्रसार करते हुए प्रभु हस्तिनापुर – गजपुर पधारें जहाँ उनके पौत्र सोमयश का शासन था। प्रभु का आगमन सुनकर संपूर्ण नगर दर्शनार्थ उमड़ पड़ा। सोमयश के पुत्र राजकुमार श्रेयांस कुमार ने प्रभु को आदर दिया और तत्काल शुद्ध आहार के रूप में उन्हें गन्ने का रस दिया, आदिनाथ जी ने व्रत का पारणा किया। गन्ने के रस को इक्षुरस भी कहते हैं, इसी कारण यह दिन इक्षु तृतीया के रूप में प्रतिष्ठित है। जैन धर्मावलंबी परम्परा में स्थानकवासी एवं मन्दिर मार्गी श्रावक श्राविकाऐं एक वर्ष लगातार इसी (वर्षीतप) एक दिन उपवास एवं दूसरे दिन पारणा एवं इसी दिन सादा भोजन ग्रहण करते हैं। यह क्रम निरन्तर वर्ष पर्यन्त चलता है। इस कड़ी में संत वर्ग एवं सती वर्ग भी इस वर्षीतप को ग्रहण करते हुए अक्षय तृतीया पर इक्षु लेकर पारणा करते हुए वर्षी तप सम्पन्न करते हैं। सम्पूर्ण वर्ष यह प्रक्रिया चलती रहती हैं। इससे शरीर निर्मल कंचन हो जाता है-शरीर भी रोग मुक्त हो जाता है।

द उपवास से आत्मा की समीपता

भगवान ऋषभेदव जैसे तद्भव मोक्षगामी को एक हजार वर्षों की साधना से आत्मोपलब्धि हुयी। तप से आत्मा जाग जाती है, भोग से छुटकारा पाकर अपना मन त्याग की ओर खिंचा जाता है। मोहपाश से हमारी आत्मा छुटकारा पाती है। भारतीय संस्कृति तप-त्याग प्रधान संस्कृति है। तप जीवन को पावन 'करने की कला और साधना है। तपस्वियों के तप के परिणामस्वरूप ही भारत ज्ञान-विज्ञान में इतना आगे बढ़ा है कि विश्वगुरू कहलाने लगा। तप से जीवन में अनेक अद्भुत और उपयोगी सिद्धियाँ, ऋद्धियाँ और उपलब्धियाँ हाँसिल की जा सकती है। अग्नि स्नान किये बिना घड़ा भी पानी भरने योग्य नहीं बनता है। स्वर्ण तपने पर ही निखरता है। सूरज तपता है इसलिए संसार को उजाला और ऊर्जा देता है। मक्खन भी तपने पर ही शुद्ध होता है एवं मक्खन की शुद्धि के लिये पात्र को भी तपना पड़ता है। आत्मतत्व की प्राप्ति के लिये जीवन को तपाना तप है। तप करने के साथ मन के विकारों कषायों तथा बुराईयों का त्याग भी परमावश्यक है, अर्थात् इच्छाओं को रोकना और कम करना तप है। मन एवं इन्द्रियों को नियंत्रित किये बिना किया जाने वाला तप सहज तप होता है, जो तरह-तरह के संताप और परिताप पैदा करता है।

उपवास का अर्थ है– आत्मा के समीप रहना। भोजन शरीर की खुराक है तो उपवास आत्मा की खुराक उपवास का धार्मिक महत्व तो है ही, अब आरोग्य की दृष्टि से भी लोग उसका महत्व समझने लगे है। उपवास से आत्मशुद्धि के साथ तन की शुद्धि और मन की शुद्धि भी होती है।

उपवास शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। उप-वास उप का अर्थ है पास और वास का अर्थ है रहना । अर्थात् उपवास का अर्थ है– अपनी आत्मा या ईश्वर के नजदीक रहना। सब प्रकार के आहार का त्यागकर जब कोई मनुष्य सिर्फ आत्म-चिंतन या ईश – चिन्तन करता है, तब उसका उपवास सार्थक होता है। समस्त शारीरिक व्याधियों का मूल मन की मलिनता है। अतः जब मन की मलीनता दूर हो जाती है, तब शारीरिक रोग अपने आप दूर हो जाते है। उपवास से एसिडिटी कम हो जाती है और सात दिन के उपवास से पूरी तरह समाप्त हो जाती है। उपवास के कारण त्वचा भी शुद्ध हो जाती है। उपवास से सिर्फ स्नायुओं का ही वजन घटता है, दिमाग, किडनी, लीवर या फेफड़ों का नहीं। हृदय को भी आराम मिलता है।

द वर्षीतप साधक की आहार चर्चा

वर्षी तप करने वाले सभी साधक साधिकाऐं श्रावक-श्राविकाऐं आहार ग्रहण करने में सजगता रखते हैं। प्रथम उपवास वाले दिन-धोवन पानी, अथवा गर्म पानी ही ग्रहण करते हैं। रात्रि को पानी भी ग्रहण नहीं किया जा सकता है फिर दूसरे दिन सूर्योदय के पश्चात् पारणा करके दिन को सादा आहार लिया जा सकता है। रात्रि को फिर किसी प्रकार का आहार एवं पानी भी नहीं लि या जाता है। यह क्रम वर्ष भर चल ता रहता है फिर अक्षय तृतीया को पारणा होने के बाद वर्षी तप सम्पन्न हो जाता है। वर्षीतप दौरान साधक साधना, सामायिक, प्रतिक्रमण में तपस्वी लीन रहते हैं। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव उस युग के प्रथम मुनि या भिक्षु थे। लोग मुनि की आचार मर्यादा से अनभिज्ञ थे। उन्हें कैसे भिक्षा दी जाये यह भी पता नहीं था। भगवान ऋषभदेव जब भिक्षा के लिए नगर में आते तो लोग उन्हें स्वामी महाराज आदि के आदरसूचक सम्बोधन देकर स्वर्ण, आभूषण, वस्त्र, फल आदि की भेंट सजाकर लाते, परंतु प्रभु ऋषभदेव के लिए यह सब अग्राह्य था । वे मौन भाव से वापस वन में लौट जाते। इस प्रकार शुद्ध भिक्षा के अभाव में एक वर्ष तक निर्जल निराहार तप करते रहे। भगवान ऋषभदेव विहार करते-करते एक बार हस्तिनापुर नगर की ओर पधारे। हस्तिनापुर में उस समय बाहुबली के पुत्र सोमप्रभ राजा राज्य करते थे। उनका पुत्र था श्रेयांस कुमार । उस रात को श्रेयांस कुमार ने एक विचित्र स्वप्न देखा-स्वर्ण के समान चमकने वाले मेरू पर्वत काला पड़ गया है और मैं दूध के कलश से उसका अभिषेक कर उसे पुनः उज्ज्वल बना रहा हूँ । प्रातः काल श्रेयांस कुमार ने अपने पिता महाराज सोमप्रभ से इस विचित्र स्वप्न की चर्चा की। राजा ने कहा– मुझे भी रात को कुछ ऐसा विलक्षण स्वप्न आया है। और उसी समय नगर श्रेष्ठी सुबुद्धि ने भी अपने-अपने विचित्र स्वप्न की चर्चा की। परन्तु स्वप्न का सूचक रहस्य कोई नहीं समझ सका। तब श्रेयांस कुमार अपने महल के झरोखे में बैठकर स्वप्न के रहस्य पर विचार करने लगे। उसी समय भगवान ऋषभदेव हस्तिनापुरं नगर में पधारे। भगवान का आगमन सुनकर सैकड़ों-हजारों लोग उनके दर्शनार्थ उमड़ पड़े। लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के उपहार सजाकर लाने लगे। परन्तु ऋषभदेव ने कुछ भी ग्रहण नहीं किया। वे सीधे राजमहल की तरफ बढ़ते चले आ रहे थे। अचानक श्रेयांसकुमार ने भगवान ऋषभदेव को राजमहल की और पधारते देखा, वह अपलक दृष्टि से देखता ही रह गया। गहन और एकाग्र भाव-पूर्वक देखने से उसे जाति – स्मरण ज्ञान हुआ, पिछला जन्म चित्रपट की भाँति स्मृतियों में झलकने लगा। उसने तत्काल समझ लिया– भगवान ऋषभदेव एक वर्ष से निराहार विचर रहे हैं। और मुनि मर्यादा के अनुकूल शुद्ध भिक्षा देने का किसी को ज्ञान नहीं है। वह शीघ्र ही राजमहलों से नीचे उतरकर, भगवान की भक्तिपूर्वक वन्दना की, प्रार्थना की-प्रभो पधारिये! आज ही मेरे आँगन में ताजे इक्षुरस के 108 कलश आये रखे हैं, वे पूर्ण शुद्ध है, आपके अनुकूल हैं, कृपा कर इक्षुरस ग्रहण कीजिये। प्रभु ऋषभदेव ने दोनों हाथों का अंजलिपुट बनाकर इक्षुरस ग्रहण किया। अत्यंत भक्तिभावपूर्वक श्रेयांसकुमार ने इक्षुरस दान कर भगवान को वर्षीतप (एक वर्ष 40 दिन लगभग) का पारणा कराकर – महान धर्म लाभ प्राप्त किया। देवताओं ने आकाश से अहोदानं, अहोदानं घोषणा कर हर्ष ध्वनियाँ की । रत्नों, पंचवर्णी पुष्पों तथा सुगंधित जल आदि की वृष्टि कर आनन्द मनाया। संसार में धर्मदान की प्रवृत्ति का शुभारंभ हुआ। इस पुनीत कार्य में यह वैशाख शुक्ल तृतीया का दिन अक्षय तृतीया के नाम से पर्व के रूप में मनाया जाने लगा। आज भी वर्षीतप के पारणें के रूप में लाखों जैन इस महापर्व को मनाते हैं। पाठक वृन्द भी आज के पावन दिवस पर शुभ संकल्प ग्रहण करते हुए अक्षय भण्डार को जीवन में स्थापित करें।

- डॉ. प्रेमसुख सुराणा, अजमेर